बीस साल बाद

और

अदालत

[कीमत ५० पैसे]

संस्थान त्रिलोचन सिंह बुकसेलर, इन्दौर-1

वह खुद ही मर जाये जरा नजरों से....
हम पर क्यों इस कदर बिगड़ती हो
छेड़ने वाले तुमको और भी है ४
बहारों पर करो गुस्सा उलझती है जो आखों से
हवाओं पर करो गुस्सा जो टकराती है जुल्फों से
कही ऐसा न हो कोई तुम्हारा दिल भी ले जाये
जरा नजरों....

४ हेमन्त–बेकरार करके हमें यूँ न जाइये]
आपको हमारी कसम लौट आईये]२
देखिए वह काली काली बदलियां
जुल्फ की घटा चुरा न ले कहीं
चोरी चोरी आके शोख बिजलियां
आपकी अदा चुरा न ले कहीं
यूँ कदम अकेले ना आगे बढाईये
आपको हमारी कसम लौट आईये बेकरार....

देखिये गुलाब की यह डालियाँ
बढ़के चुम न ले आपके कदम
खोये खोये भँवरे भी हैं बागों में
कोई आपको बना न ले सनम
बहकी बहकी नजरो से खुद को बचाईये
आपको हमारी कसम लौट आईये बेकरार....

जिन्दगी के रास्ते अजीब है
उनपे इस तरह चला न कीजिये
खैर है इसी में आपकी हुजूर
अपना कोई साथी ढूंढ़ लीजिए
सुनके दिल को बात यूं न मुस्कुराईये आपको....

५ लता–ऐ मुहब्बत मेरी दुनिया में तेरा काम न था
तू न आई थी तो गम का भी कहीं नाम न था, ऐ....
जाने क्यूं आज है शिकवा मुझे दुनिया भर से
इससे पहले तो किसी पर कोई इल्जाम न था, ऐ....
मेरी किस्मत के मुझे अश्क ही पीने को मिले
मेरे हिस्से में मुहब्बत का कोई जाम न था ऐ....
देने वाले मुझे क्यूं तूने मुहब्बत दे दी
क्या गमें इश्क से पहले मुझे आराम न था ऐ....

क्वात्रा फिल्मस कृत....

अदालत

नर्गिस, प्रदीप कुमार, जवाहर, माला, प्राण आदि ।
संगीत–मदन मोहन गीत–राजा मेंहदी अलीखाँ

१– दुपट्टा मेरा मलमल का रंग सलेटी हलका
जमाना लुट जायेगा सर से अगर ढलका
बटन मेरे कुरते के सितारे आसमानी सजना

वह खुद ही मर जाये जरा नजरों से....
हम पर क्यों इस कदर बिगड़ती हो
छेड़ने वाले तुमको और भी है ४
बहारों पर करो गुस्सा उलझती है जो आखों से
हवाओं पर करो गुस्सा जो टकराती है जुल्फों से
कही ऐसा न हो कोई तुम्हारा दिल भी ले जाये
जरा नजरों....

४ हेमन्त–बेकरार करके हमें यूँ न जाइये]
आपको हमारी कसम लौट आईये]२
देखिए वह काली काली बदलियां
जुल्फ की घटा चुरा न ले कहीं
चोरी चोरी आके शोख बिजलियां
आपकी अदा चुरा न ले कहीं
यूँ कदम अकेले ना आगे बढाईये
आपको हमारी कसम लौट आईये बेकरार....

देखिये गुलाब की यह डालियाँ
बढ़के चुम न ले आपके कदम
खोये खोये भँवरे भी हैं बागों में
कोई आपको बना न ले सनम
बहकी बहकी नजरो से खुद को बचाईये
आपको हमारी कसम लौट आईये बेकरार....

जिन्दगी के रास्ते अजीब है ५
उनपे इस तरह चला न कीजिये
खैर है इसी में आपकी हुजूर
अपना कोई साथी ढूंढ़ लीजिए
सुनके दिल की बात यूं न मुस्कुराईये आपको....

५ लता–ऐ मुहब्बत मेरी दुनिया में तेरा काम न था
तू न आई थी तो गम का भी कहीं नाम न था, ऐ....
जाने क्यूं आज है शिकवा मुझे दुनिया भर से
इससे पहले तो किसी पर कोई इल्जाम न था, ऐ....
मेरी किस्मत के मुझे अश्क ही पीने को मिले
मेरे हिस्से में मुहब्बत का कोई जाम न था ऐ....
देने वाले मुझे क्यूं तूने मुहब्बत दे दी
क्या गमें इश्क से पहले मुझे आराम न था ऐ....

क्वात्रा फिल्मस कृत....

अदालत

नर्गिस, प्रदीप कुमार, जवाहर, माला, प्राण आदि ।

संगीत–मदन मोहन गीत–राजा मेंहदी अलीखाँ

१– दुपट्टा मेरा मलमल का रंग सलेटी हलका
जमाना लुट जायेगा सर से अगर ढलका
बटन मेरे कुरते के सितारे आसमानी सजना

इसलिये देखा न अन्धेरा कभी तेरे अँगना
हमारी गली मत आना यह जालिम रस्ते है
पड़ा है महँगा दिलवालों को लुटेरे यहाँ बसते है
हम सा भी कोई न जमाने में निडर होगा
वहाँ पे दम तोड़ेंगे जहाँ पे तेरा दर होगा

२– जमीं से आसमाँ पर बिठाके गिरा तो न दोगे
अगर हम यह पूछे कि
दिल में बसा के भूला तो न दोगे
ऐ रात इस वक्त आँचल में
तेरे जितने भी है वह सितारे ६
जो दे दे तू मुझको तो फिर मैं लुटा दूं
किसी की नजर पे यह सारे
कहो के यह रंगीन सपने सजा के मिटा तो न दोगे
अगर हम यह पूछे कि
दिल में बसा के भुला तो न दोगे
तुम्हारे सहारे निकल तो पड़े है
है मंजिल कहाँ दिल न जाने
जो तुम साथ दो ग जायेगी
एक दिन मंजिल गले से लगाले
इतना तो दिल को यकीं है हमें तुम दगा तो न दोगे
अगर हम यह....

३ लता–जाना था हमसे दूर बहाने बना लिये
अब तुमने कितनी दूर ठिकाने बना लिये जाना....
रूखसत के वक्त तुमने जो आँसू हमें दिये
उन आँसुओं से हमने फसाने बना लिए जाना....
दिल को मिले जो दाग जिगर को मिले जो दर्द
इन दौलतों से हमने खजाने बना लिये जाना....

४ लता–यूं हसरतों हसरतों के दाग मुहब्बत में धो लिए
खुद दिल से दिल कीं बात कहीं और रो दिये
यूँ हसरतों के दाग ७
घर से चले थे हम तो खुशी की तलाश में २
खुशी की तलाश में
गम राह में खड़े थे वही साथ हो लिए
खुद दिल से.... यूं हसरतों....
होठो को सी चुके तो जमाने ने ये कहा २
जमाने ने ये कहा
ये चुप सी क्यूं लगा है अजी कुछ तो बोलिए
खुद दिल से.... यूं हसरतों....
मुरझा चुका है फिर भी यह दिल फूल ही तो है२
यह दिल फूल ही तो है
अब आपकी खुशी इसे कांटों में तोलिये यूं....

५ लता व आशा- जा जा जारे जा साजना

काहे सपनों में आये जाके देश पराये बेवफा
तुझको गरज क्या मेरी वफा से
जायूँ या मरुं मैं तेरी बला से
जाजा जारे काहे सपनों में आये, जाके देश पराये बेवफा
दिल तो दिया था तुझे बड़े अरमान से
प्यार जगाया भी तो किस बेईमान से
दे ही गया जो दगा
दो दिन के पहले झुठी खुशी दी
दर्द भरी फिर यह जिन्दगी दी
हाथ क्यों पकड़ बैठी मीत का
ढग न आये जिसे जरा भी प्रीत का
जाने न क्या है वफा

६ लता—उनको ये शिकायत है कि हम, कुछ नहीं कहते २
अपनी तो ये आदत है कि हम, कुछ नहीं कहते २
उनको ये शिकायत हैं
कहने को बहुत कुछ था, अगर कहने पे आते २
दुनिया की इनायत है कि हम, कुछ नहीं कहते २
उनको ये शिकायत है
कुछ कहने पे तूफान, उठा लेती है दुनिया२
अब इसपे कयामत है कि हम, कुछ नहीं कहते २
उनको ये....

+